विषय प्रवेश

गायन, वादन तथा नृत्य के त्रय संयोग को संगीत कहा जाता है| विद्वानों का मानना है कि संगीत की उत्पत्ति हजारों वर्ष पूर्व हुयी है। मानव इतिहास के साथ साथ ही संगीत का भी विकास हुआ होगा। इसलिए मानव इतिहास और संगीत का घनिष्ठ सम्बंध है, ऐसा मान सकते है। इस धरातल के सभी स्थानों में संगीत की मधुर ध्वनि गुंजयमान है। स्थान अनुसार हरेक व्यक्ति एवं समूह की संगीत की परिभाषा, गायन शैली, संगीत को समझने की क्षमता एवं प्रस्तुतीकरण में अवश्य ही अंतर होता है। मानव बस्ती के विकासक्रम में संगीत में भी कई परिवर्तित स्वरूप होते होते वर्तमान समय तक पाहुचा होगा। संगीत के विभिन्न स्वरूपों को विद्वानों ने भिन्न भिन्न नाम दिएं है। उन में से लोक संगीत अत्यंत प्रचलित प्रकार है। लोक संगीत शब्द की उत्पत्ति लोक और संगीत शब्द के योग से हुई है। इसलिए लोक द्वारा साधारण तरीके से गाया जाने वाला संगीत ही लोक संगीत है। लोक संगीत की माध्यम से किसी भी स्थान, प्रांत तथा पूरे देश की सांस्कृतिक एवं सामाजिक पक्ष को जान सकते है इसलिए लोक संगीत को किसी भी स्थान के दर्पण के रूप में मान सकते है।

लोक संगीत हरेक स्थान तथा हरेक देश का अलग अलग होता है। ऐसे में नेपाल देश की भी अपना अलग संस्कृति, परम्परा तथा संगीत में विशेष पहचान है। प्राचीन समय से ही प्रसिद्ध देवभूमि, ऋषि-मुनियों की तपस्थली, विशाल हिम शृंखलाओं से सुसज्जित, प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर रमणीय दृश्य अवस्थित अत्यंत सुन्दर देश नेपाल बहुजातीय, बहुभाषीय, बहुसांस्कृतिक एक स्वतन्त्र सार्वभौम सत्ता सम्पन्न गणतांत्रिक राष्ट्र है। यह अत्यंत छोटा राष्ट्र है जो दो विशाल देश भारत और चीन के मध्य स्थान में स्थित है। छोटा राज्य होते हुए भी विविध भाषा, संस्कृति, कला, साहित्य, लोकसंगीत आदि से परिपूर्ण है। भौगोलिक दृष्टि से देखा जाए तो हिमाल, पहाड़, तराई तथा पूर्व मेची से पश्चिम महाकाली तक के विशाल क्षेत्र में विभिन्न जाति तथा जनजातियों के निवास है। उन सभी जाति तथा जनजातियों की भाषा, कला, संगीत एवं संस्कृति भिन्न भिन्न है। इन्हीं विविधताओं के कारण छोटा देश नेपाल भी विशाल देश बन सका है। नेपाली लोक परम्परा एवं संस्कृति को बढ़ावा देने में नेपाल की भिन्न भिन्न जातियों में से नेवारी जाति की कला, संस्कृति, संगीत, परम्पराओं का विशेष योगदान रहा है। नेपाल के मध्यमाञ्चल प्रदेश में स्थित काठमांडू उपत्यका में प्राचीन समय से अधिकांशतः इस जाति का निवास रहा है। इसलिए नेवारी जाति को आदिवासी जाति कहा गया है। इस जाति का अपनी ही पृथक परम्परा, रीतिरिवाज, भाषा, लिपि, संगीत, वादन, नृत्य इत्यादि परम्परा यथावत है। नेवारी जाति का मुख्य पेशा खेती, व्यापार होते हुए भी अपनी कला कौशल, संगीत, वाद्य, नृत्य तथा नाटक परम्परा में कुशलता देखने को मिलती है। नेवारी जाति में ज्यादातर दो धर्मों के अनुयायी मिलते हैं बौद्ध और हिन्दू। यह दोनों धर्मावलम्बी भगवान के प्रति वेजोड़ आस्थावन है। इसी के

फलस्वरूप नेपाल उपत्यका काठमांडू में विभिन्न मठ-मंदिर, चैत्य, गुम्बा इत्यादि अनगिनत रूप में देख सकते है। प्राचीनकाल से ही भक्ति भावना में आस्था रखने वाली नेवारी जाति में विभिन्न प्रकार के भक्ति-भजन तथा अन्य प्रकार के गीत संगीत गाने का प्रचलन रहा है। जिसको नेवारी लोक संगीत के अन्तर्गत रखा गया है। नेवारी लोक संगीत की निरन्तरता की विशेषता को देखा जाए तो इस जाति में मनाए जाने वाले रीतिरिवाज, जात्रा-पर्व, त्यौहार, संस्कारगत कार्य इत्यादि है। अतः नेवारी लोक संगीत को नेवारी संस्कृति परम्परा का दर्पण मान सकते है।

नेवारी जाति के जनसमुदाय अपनी परम्परा को संरक्षण एवं संवर्धन करने में हमेशा तत्पर रहते है। संगीत के गुरु अपने शिष्य को सिखाने में रुचि रखते है और अपने नगर में होने वाले हरेक चाडपर्वों में नेवारी संगीत के समावेश पर ध्यान देते हैं। नेवारी संगीत में गायन के साथ साथ वाद्य एवं नृत्य का भी उतना ही प्रयोग होता है। नेवारी जाति में ही नहीं बल्कि पूरे नेपाली लोक संगीत में वाद्यों की भूमिका प्रमुख मिलती है। नेवारी संगीत में विभिन्न गीत प्रकार के साथ साथ शास्त्रीय संगीत में विभाजित वाद्यों के चार प्रकार के अन्तर्गत आने वाले मुख्य वाद्यों का वर्णन एवं वादन प्रक्रिया को अध्ययन करने का प्रयास किया है। विभिन्न नृत्य तथा नाटकों में नेवारी वाद्य एवं गायन का भरपूर प्रयोग देखने को मिलता है। अपने जाति की ही नहीं बल्कि अपने देश की सांस्कृतिक पहचान उच्च रखने में, कला-कौशल का प्रदर्शन एवं लोक संगीत की गुंजयमान से देश का गौरव एवं मान-समान बढ़ाने वाला, नेवारी संगीत के गायन प्रकार, गायन तथा नृत्य में प्रयोग प्रमुख वाद्य एवं उनके प्रयोग के बारे में अध्ययन करके तथ्यों को संकलित करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोधकार्य का विषय "नेपाल का नेवारी संगीत : एक अनुसंधानात्मक विवेचन " है तथा विषय को ध्यान में रखते हुए नेवारी संगीत के प्राचीन इतिहास से लेकर वर्तमान समय तक के प्रचलन एवं महत्व के बारे में वर्णन करने का प्रयास किया गया है। नेवारी संगीत विषय में उपलब्ध वर्णन तथा तथ्यांकनों के आधार पर इस शोध कार्य को प्रस्तुत किया है।

(मोहन शोभा महर्जन)